१९४५ में जब सब छूट कर आये, और फिर से राजनीतिक गतिविधियां शुरू हुईं, तब शास्त्रीजी को प्रयाग की एक एसेम्बली सीट लड़ने के लिए दी गयी. कैसे सरल वो थे, और कितनी आत्मीयता के सम्बन्ध थे, इसका एक छोटा सा उदाहरण है. एक दिन टंडन जी के यहाँ वो मिले तो कहने लगे 'भई तुम्हारे यहाँ जो प्रचारक है इस क्षेत्र में, राजनारायण, वह बहुत अच्छा गाता है. उसे देश भक्ति के बहुत गीत आते हैं. मेरे कार्यकर्ताओं ने बताया है कि वह लोगों को बाँध कर रख सकता है.' राजनारायण जो जौनपुर के नए प्रचारक आये थे, सचमुच ही इन सभी गुणों से युक्त थे. शास्त्रीजी ने कहा 'हमारे यहाँ कांग्रेस में कोई बहुत अच्छे स्वर में गीत वगैरह गाने की ऐसी कोई पद्धति नहीं है, और हमें सभा में पहुँचने में कुछ देर हो जाती है क्यों नहीं एक महीने के लिए राजनारायण हमें दे दो. पहले गीत गाकर अच्छा वायुमंडल उत्पन्न करेगा.' मैंने कहा 'अवश्य. मैं चाहता हूँ कि आप अपने क्षेत्र में अच्छे मतों से जीतें, और अगर राजनारायण इसमें सहायक हो सकते हैं तो उन्हें आपके पास भेज देंगे.' इससे यह सिद्ध होता है कि कांग्रेस के और संघ के ऐसे कुछ कोई भेद उभर कर सामने नहीं आये थे. (२)

जब मैं दो साल के लिए प्रचारक बन कर निकला तब भाउराव ने मुझसे कहा कि शास्त्रीजी से मिलने का क्रम बनाए रखना और कई तरह की गलतफहमियां, भ्रम उनके मन में होंगी उन्हें दूर करना भी तुम्हारा काम है. मैं शास्त्रीजी से बीच-बीच में मिलता रहता था. थोडा-बहुत हंसी मजाक भी चलता रहता था. एक बार कहने लगे कि तुम्हारी बैठकें वगैरह बहुत होती हैं. तो मैने कहा, 'कितने स्वयंसेवक आये, क्या क्या विशेष कार्यक्रम हुए, आगे कौनसे कार्यक्रम होने वाले हैं, किसी विशेष व्यक्ति को बुलाना है, उसकी चर्चा करते हैं.' और शास्त्रीजी हंस कर बोले, 'इस बात की चर्चा नहीं करते क्या कि मुसलमान किस मोहल्ले में कितनी संख्या में रहते हैं, कहाँ उनकी झोंपड़ीयाँ हैं, वह क्या गडबडी कर सकते हैं, इसकी चर्चा नहीं करते?' मैंने उनसे कहा, 'शास्त्री जी, आप जिस बैठक में - गटनायक से लेकर प्रचारक की - जब चाहें आयें, हम आपका स्वागत करेंगे. उन्होंने हंस कर टाल दिया. इसी बीच में पूज्य गुरुजी लखनऊ पधारे. मैं शास्त्रीजी के पास गया और बताया, 'बाहर के लोगों के लिए एक कार्यक्रम रखा है. इसमें गुरुजी रहेंगे और सब प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देंगे. यदि आप इस कार्यक्रम में चलें तो बहुत अच्छा रहेगा.' तब उन्होंने अपने हृदय कि बात कही, 'तुम मेरे साथ कहीं भी घूम सकते हो, तुम्हारे लोगों का तुम पर पूर्ण विश्वास है. कोई नहीं कहेगा कि तुम कांग्रेसी हो गए हो. पर मैं यदि तुम्हारी मीटिंग में चला गया तो मुझ पर ठप्पा लग जाएगा कि मैं, लाल बहादुर शास्त्री, आरएसएस की दृष्टिकोण का व्यक्ति है. यही हमारे और तुम्हारे में विशेष अंतर है.' मैंने आश्चर्य से पूछा, 'आप जैसा पुराना कार्यकर्ता इतना विश्वसनीय नहीं है? और आप तो होम मिनिस्टर हैं, आपका कार्य सब चीज़ों को सही रूप से जानना है.' पर शास्त्रीजी ने इस बारे में नकारात्मक उत्तर दिया तो पता चला कि राजनैतिक दलों में कितना अविश्वास रहता है. (४)